शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

'अल्मा कबूतरी उपन्यास में आदिवासी

प्रा.दत्तात्रय दशरथ पटेल
पू.सा.गु.वि.प्रसारक मंडल संचालित
कला-विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय
लोणखेड़ा, ता.शहादा, जि.नंदुरबार, भारत

शोध संक्षेप

'अल्मा कबूतरी' मैत्रेयी पुष्पा का प्रसिद्ध उपन्यास है। यह उपन्यास कबूतरा आदिवासी जीवन को केंद्र में रखकर लिखा गया। उपन्यास के कथाक्षेत्र में बुंदेलखंड की 'कबूतरा' नामक आदिवासी जाति है, जो अपना संबंध जौहर के लिए किंवदंती बन चुकी रानी पद्मनी से जोड़ती है तथा पौराणिक युग तक छलांग लगाकर महादेव शिव के समाज के शामिल हो जाती है। आज भी यह जाति दर-दर भटकती दूसरों की जमीन पर बसती है। उनकी जीविका का एकमात्र साधन चोरी करना है। प्रस्तुत शोध पत्र में 'अल्मा कबूतरी' में अभिव्यक्त आदिवासी विमर्श पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

मैत्रेयी जी ने 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में दो समाजों का चित्रण किया है। पहला आदिवासी कबूतरा समाज, दूसरा सभ्य समाज जिसे कबूतरा जाति के लोग अपनी भाषा में कज्जा कहते हैं। मैत्रेयी जी ने इस इलाके का सभ्य समाज 'कज्जा' से उनके टकराव, संघर्ष और पराजय को मार्मिकता के साथ चित्रित किया है। दोनों समाजों की आपस में मुठभेड़ और बीच का द्वंद्व ही इस उपन्यास का केंद्रीय विषय है। मैत्रेयी पुष्पा ने उपन्यास में यह दर्शाया है कि भारत में आज भी कुछ ऐसी अभागी जन-जातियां हैं जो आजादी का अर्थ नहीं जानती हैं। उनके पास न अपनी जमीन है, न घर-बार। औपनिवेशिक शासन ने उन्हें 'जरायमपेशा' जाति घोषित कर उन्हें सभ्य समाज की नजरों में उपेक्षा और घृणा का पात्र बना दिया, पुलिस अत्याचारों का उन्हें केंद्र बनाया। आजदी मिलने के बाद ऐसी जातियों को नागरिकता का अधिकार प्राप्त हुआ, लेकिन जीवन जीने के कोई साधन न मिलने पर पुरुष अपराध कर्म और नारियां देह व्यापार करने लगती हैं। यह उपन्यास हारे हुए व्यक्तित्व की कथा है। अल्मा की कहानी इस स्थिति के परिप्रेक्ष्य में एक नारी विद्रोह की कहानी है।

उपन्यास का कथ्य 'बुंदेलखंड' की विलुप्त होती जनजाति का समाज वैज्ञानिक अध्ययन बिलकुल नहीं है। हांलाकि कबूतरा समाज का लगभग संपूर्ण ताना-बाना यहां मौजूद है। यहां के लोग-लुगाइयां, उनके प्रेम-प्यार, झगड़े, शौर्य इस क्षेत्र को गुंजायमान किए हुए हैं। भारत की आजादी के इतने सालों बाद भी इनकी नयी पीढ़ी सम्मानपूर्वक जीवन यापन करने का कोई विकल्प नहीं दिया है। मैत्रेयी पुष्पा ने उपन्यास के अंत में एक आदिवासी औरत अल्मा को विधानसभा का चुनाव प्रत्याशी बनाकर उसकी जीत में निश्चितता दिखाकर अपने नारीवाद को लहकाना, ये सारी घटनाएं कबूतरा समाज की कभा-व्यथा की निर्देशक लगती हैं।

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

'अल्मा कबूतरी' उपन्यास का कथ्य

उपन्यास का प्रारंभ मंशाराम और कदमबाई की कथा से होता है, जिसमें कबूतरा जनजाति और सभ्य समाज की आपसी टकराहट व द्वंद्व स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। यह केवल मंशाराम और कदमबाई की प्रेम कहानी न होकर समाज की दो विपरीत दिशाओं की टकराहट की कथा है, जिसमें हार हमेशा निर्बल और गरीब की होती है। मंशाराम के पिता पचास बीघे जमीन के मालिक हैं, जिनमें से दो बीघे जमीन पर कबूतरों के डेरे डाले हैं और यह बस्ती आधा बीघा जमीन हग-मूतकर बर्बाद करती है। थोड़ी जमीन दारु का विषैला पानी बहाकर पूरी करते हैं। मंशाराम के पिता सोचते हैं कि इस बस्ती को किसी भी प्रकार अपनी जमीन से हटाना चाहिए। वे इसी पर मंशाराम से कहते हैं, "वह दिन कब आएगा जब इन्हें हम उखाड़ फेंकेंगे। एक मन करता है, दारु को लैसंससुदा ठेकेदारों को इन्हें कुचलने का ठेका दे दूं। राजसिंह ने तो ऐसा ही किया था। खेत खाली हो गए।"1 थोड़े समय के पश्चात् मंशाराम के पिता की मृत्यु सर्पदंश के कारण हो जाती है। असमय पिता की मृत्यु ने सोलह वर्ष के मंशा के कंधों पर भारी गृहस्थी का बोझ डाल दिया और पिता की इच्छा पूरी करने का प्रयास करता है। मरने से पहले उनके पिता ने उन्हें आदिवासियों के बारे में किस्सा सुनाया थ। वो किस्सा यह था, "रानी झांसी के संग लड़ने वाली को उनके शहीद होने के बाद जब अंग्रेजों ने खदेड़ना शुरू किया तो वे जहां-तहां ऐसे फ़ैल गए जैसे पानी फ़ैल जाता है। माटी उसे बिना शोरगुल किए सोख लेती है। जिनको बुंदेलखंड की मिट्टी ने अपा लिया, वे ऐसे लोग थे, जिनकी बोलाबानी, रहन-सहन, तौर-तरीके अपने इलाके के थे।...वे अनाथ-असहाय कुछ तो फौजी बूट तले कुचलकर नट-खप गए, कुछ भटकते भागते यहां चले आए।"2

मंशाराम कदमबाई की दुबली-पतली काया पर मर मिटा था। तीस वर्षीय मंशाराम और बीस वर्षीय कदमबाई। कदमबाई की शादी जंगलिया से हुई थी। इसीलिए मंशाराम जंगलिया को चोरी के इलजाम में पुलिस को पकड़वा देता है और धोखे से कदमबाई के शरीर को पाना चाहता है। कदमबाई की यौवन भरी मांसल देह जंगलिया का अधिक विरह न सह सकी। वह विरह में तड़पने लगती है। फागुनी बसंती रात में जंगलिया कदमबाई को मिलने का वादा करता है। जिस जगह पर जंगलिया रात में कदमबाई से मिलने वाला था, उसी जगह पर जंगलिया के आने से पहले ही मंशाराम माते पहुंच जाता है। धोखे से जंगलिया की हत्या करके कदमबाई की देह हासिल कर लेता है। लेकिन इस रात की घटना से कदमबाई के गर्भ में एक अंश छूट जाता है।..."और उस रात ने उस फसल ने, उस प्यार ने कदम के गर्भ में एक अंश बूंद बढ़ने के लिए छोड़ दी। बूंद की गंध हवा के साथ खेतों पर फेल गई।"3 मंशाराम ओर कबूतरी के संसर्ग से जन्म लेता है राणा। राण न कज्जा बन पाता है और न कबूतरा रह पाता है। बचपन से ही अपनी मां के लिए समस्या बनता है। राणा में कज्जा लोगों के लक्षण दिखाई देते हैं। उसका आचार-विचार कज्जा परिवार की तरह होता है। वह आगे कज्जा मंशा माते का पुत्र करण का अच्छा दोस्त बन जाता है। राणा के व्यवहारों से कदमबाई असंतुष्ट है। आखिर में वह अपने बेटे को पढ़ने के लिए रामसिंह के घर भेज देती है।

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

रामसिंह का इतिहास मां भूरी से प्रारंभ होता है। बस्ती की पहली मा थी भूरी, जिसने अपने बेटे रामसिंह को कुल्हाड़ी, डंडा न थमाकर पोथी, पाटी पकड़ाई। इसके लिए मां भूरी कज्जा लोगों के नीचे बिछती रही और कल्पना में बेटे को सरग के सितारों क बीच टांक उपर से आक्रमण सहती रही। वह अपने बेटे रामसिंह को पढ़ने में जी-जान से मेहनता करती है। रामसिंह शिक्षा प्राप्त कर सभ्य समाज में रहने का प्रयास करता है। किंतु उसे वह समाज स्वीकार नहीं करता है। वह शिक्षित होकर भी कबूतर बनकर जीने को अभिशप्त है। मां भूरी से कहती है, "जिस दिन रामसिंह ने बाप का लाल खून नीली स्याही में बदलकर अपने हक में चार अंक लिख लिए, समझूंगी मुझमें राई भर कलंक नहीं। विद्या रतन के आगे देह का खजाना कुछ भी नहीं।"4

अल्मा कबूतरी आदिवासी रामसिंह की बेटी है, जो आदिवासी समाज के उत्कर्ष की परिधि के केंद्र में है। शीर्षक के अनुरूप उपन्यास में अल्मा नायिका है। अपने पिता की परंपरा निभाती अल्मा राणा के प्रेम में तन्मय होती है। राणा को अपने सौंदर्य से बैचेन करती है। राणा अल्मा के बिना एक पल भी नहीं रह पाता। कहने के लिए और छोड़ने के लिए राणा अल्मा को छोड़ देता है, किंतु छोड़ने के बाद राणा के मन को अल्मा की स्मृति और भी अधिक परेशान करती है। अल्मा अच्छी पुत्री, अच्छी प्रेमिका, अच्छी सन्नारी बनकर नारी के सहज रिश्तों को निभाती है। दूसरी तरफ अल्मा का पिता रामसिंह कबूतरा लोगों को शिकार बनाने के लिए पुलिस की दलाली करता है। यह बात राणा को पता चलते ही वह अंदर तक हिल जाता है। वह सोचता है, "उसकी आंखों के सामने सरमन, दुलन मलिया, खुरदा है, सबके आगे अल्मा। माधिया गुरु कंकाल जैसा....सिर हिलाता हुआ....एक दिन ये लोग इस लड़की को भी ले जाएंगे।"5 गुरु को लगता है कि शायद अल्मा को बेच न दे। अल्मा की चिंता करता हुआ गुरु राणा के बहुत करीब आ गया। कहता था बेच न डाले बेटी को। बेचेगा नहीं पर मजबूर तो हो सकता है।"6 राणा रामसिंह को छोड़ अपने कबूतरा साथियों को रामसिंह की असलियत बताकर स्वयं रामसिंह के जाल में फंसने से बचता है। अल्मा को बेचने की बात जब कोई सोचेगा तो अल्मा के लिए लड़ने के लिए तैयार हो जाता है। यहां मैत्रेयी ने राणा के माध्यम से नारी बेचने के खिलाफ राणा का चित्रण किया है। राणा कहता है, "मैं लड़ लूंगा। अल्मा की बात सोचने वाले का मगज फोड़ दूंगा। बेचनेवाले का सिर काट दूंगा। छुरा चलाने में उस्ताद मैं....मां की कुल्हाड़ी विद्या आती है।"7

राणा को अल्मा का पिता रामसिंह कबूतरा लोगों को पकड़ाने में पुलिस को मदद कर रहा है तो राणा को धक्का लगता है। वह राणा अल्मा से कहता है कि थोड़े से सुख-सुविधाओं के लिए रामसिंह अपनी जाति के लोगों को खत्म कर रहा है। वह कहता है, "बाप-बेटी अपनी कौम को खत्म करने के पैसे वसूल रहे हैं। अच्छे खाने और कपड़ों की खातिर, सुख-सुविधाओं के गुलाम लोग।"8 रामसिंह की वजह से राणा और अल्मा को अलग होकर विरह सहना पड़ता है और राणा अपनी बस्ती में वापस आ जाता है और रामसिंह की हकीकत बताता है। कदमबाई को रामसिंह और बेटासिंह की मिलीभगत पर भरोसा नहीं होता। पुलिस भी कबूतरा जाति के लोगों को दबोचना चाहती है। सरकार ने इन जनजातियों को भी भारतीयता का अधिकार दिया है। सरकार

को चुनने का अधिकार भी इनको है। उपन्यास का केहर पात्र भविष्यवाणी करता है, "अब सरकार हम जैसे लोगों के हाथों में आने वाली है, क्योंकि हमी उसे बनाने और बचाने में सहायक होंगे। देखा नहीं, लोग हमारे लड़कों को पुकारने लगे हैं।"9 राणा मंशाराम, केहरसिंह और करन आदि को अपने मोहल्ले के कुत्ते सरीख आदमी कहता है जो हमेशा अन्याय करता है और कबूतरा जाति को बिल्लियों और चूहे से ज्यादा कुछ नहीं समझते। "कबूतराओं को बिल्लियों से ज्यादा कुछ नहीं समझते। बिल्ली नही चूहे। वे ठेक्के की बागडोर दारु बनाने में माहिर लोगों को न सौंपेंगे। यही तो घपला है, सैकड़ों वर्षों से चला आ रहा अन्याय।"10 कुछ दिनों के बाद रामसिंह की मृत्यु हो जाती है और रामसिंह ने मृत्यु से पहले अल्मा की परवरिश की व्यवस्था मोघिया गुरु से करवाता है। मोघिया गुरु अल्मा को दुर्जन कबूतरा के घर पहुंचा आता है। दुर्जन के घर से ही अल्मा की करुण जिंदगी का सफर शुरू होता है। आदिवासी लोग समस्या आने पर अपने पास की चीजें गिरवी रख आते हैं। इसका चित्रण उपन्यासकार ने किया है। दुर्जन कहता है, "अल्मा तू गिरवी धरी है, समझे रहना। भला इसमें बुराई भी नहीं। हम कबूतराओं में तो यह चलन रहा है, जेवर, गहना-बासन और बेटी मुसीबत के समय काम आते हैं। अब तू मेरी समझ हुई।"11 अल्मा अपने उपर बीती बातों को राणा को चिट्ठी के माध्यम से कह देती है। राणा अल्मा को खोजने का प्रयास करता है। लेकिन दुर्जन अल्मा को नारियों के व्यापारी सूरजभान के हाथ बेचता है।

सूरजभान का व्यक्तित्व मनुष्यगत लक्षणों से हटकर है। उसका व्यवसाय गुप्त रूप से घरों में से औरतों को उठवाना तथा पढ़े-लिखे लोगों को नौकरी का लालच देकर लाखों रुपये हजम करना है। मंशाराम को अपने भतीजे धीरज की डायरी में अल्मा के बारे में जानकारी मिलती है। लेकिन धीरज उसका शिकार बनता है। नौकरी के लालच में कुछ रुपये घूस देकर सूरजभान के यहां नौकरी प्राप्त करता है। नौकरी भी कैसी उठाई गई औरतों की देखभाल करना। धीरज की नौकरी बंदी अल्मा को खाना-पीना देने एवं देखभाल करने में लगती है। लेकिन सूरजभान की असलीयत जानने के बाद उसे अपनी नौकरी पर घृणा होती है। अल्मा के व्यक्तित्व से धीरज प्रभावित हो जाता है और उसे सूरजभान की कालकोठरी से भगाने में सफल हो जाता है। लेकिन धीरज को अल्मा को कोठरी से भगाना महंगा पड़ता है और सूरजभान अल्मा का गुस्सा धीरज पर निकालकर उसका पौरुष होना खत्म कर देता है और कहता है, "नत्थुआ इस लौंडे का भरोसा न करना। कबूतरी को मां-बहन नहीं समझेगा सवारी करने लगेगा। तू साले का लिंग उखाड़ लेना। हिजड़ा होकर हमारे ज्यादा काम आएगा।"12 आगे अल्मा पकड़ी जाती है और मंत्री श्रीराम शास्त्री के घर पहुंचायी जाती है। धीरज के अपने मामा को समझा रहे हैं कि, "श्रीराम शास्त्री चुनाव के लिए अल्मा का इस्तेमाल करेगा और कबूतरा जाति से फायदा उठाएंगे। धीरज मामा से कहता है, "मंत्री हैं तभी तो यह करेगा। अल्मा को मोहरे की तरह इस्तेमाल....। उसके चुनाव क्षेत्र में कितनी कबूतरा-बस्तियां हैं ? अल्मा को जीप-झंडी की तरह फहराता फिरेगा कि देखो मैंने शहीद होकर दिखा दिया। मैं अब तुम से अलग नहीं।"13

मैत्रेयी पुष्पा ने नेताओं द्वारा आदिवासियों, दलितों के शोषण करने का चित्रण किया है। नेता

चुनाव में उनका उपयोग वोट के लिए करते हैं और बाद में ध्यान नहीं देते। श्रीराम शास्त्री के लिए अल्मा की इज्जत वोटों से ज्यादा नहीं है। अल्मा जब कोठरी में फिर से बंद होती है तो वह उंची जाति, खानदानी लोग, नत्थु, धीरज आदि को देखकर अचरज होता है, "ये उंचे खानदानी लोग और ये अकड़, ऐठे नीच जाति के आदमी पेट भरने के लिए आए हैं। बांधकर रखो जूते तले दबाकर रखो, पैसा चाहिए बस। नत्थु इसी को इज्जत मानकर गांव छोड़कर आया है। मैला ढोने के मुकाबले यह सम्मान का काम....धीरज बाबूजी पढ़-लिखकर नौकरपेशा होने का भरम पाल रहे हैं। जमीर का मोल भर लिया।"14 दूसरी बार अल्मा को जहां पनाह लेती है, वह मामूली कोठी नहीं थी, बल्कि प्रदेश के समाज कल्याण मंत्री का आवास है, उसी आवास से लगा सर्वेंट क्वार्टर है, जिसमें संतोले अपनी पत्नी के साथ रहता है। अल्मा अनेक प्रकार के लोगों द्वारा शोषित व पीड़िता होती है। किंतु उसमें सहन करने की अद्भुत शक्ति है। यह बात केवल अल्मा पर लागू नहीं होती, किंतु सभी आदिवासी कबूतरा नारियों पर भी लागू होती है।

संतोले की बहू अल्मा से मंत्रीजी को खुश करने के लिए कहती है और अपनी जवानी का उदाहरण देते हुए कहती है, "जवानी रहते हमने दस-दस आदमियों को खुश रखा है। तू एक में मरी जा रही है। अरी मूरख आदमी की खुशी ही हमारी जिंदगी है। मरना है तुझे। कल के दिन सूरजभान के हवाले न कर दे तो ? नोंचकर फेंक देगा। हैवान को खुश करके भी तुझे जिंदगी नसीब न होगी। देख मेरी ओर देख।"15 अल्मा को पूरी तरह से नंगा करके श्रीराम शास्त्री के कमरे में पहुंचाया जाता है, लेकिन जो लाचारी होती है वह अल्मा की आंखों में नहीं होती। शास्त्री ने अनेक स्त्रियों के साथ रास क्रीड़ा की लेकिन सभी ने पैसों के कारण, लालच, मजबूरी, बाधा, लेकिन अल्मा में ऐसा कुछ भी नहीं दिखा तो वह अल्मा को कुछ भी नहीं करता और कमरे से बाहर निकल आता है। वह बिना अल्मा की मर्जी के उसे हाथ भी नहीं लगाना चाहता है। संतोले की बहू अल्मा के रूप का वर्णन करके उसका मूड बदलना चाहती है तब शास्त्री जी संतोले की बहू से कहता है, "औरत और थाली प्यारसे परसी हुई ही संतोष देती है। छीनकर खाने-सोने में क्या मजा ? आदमी मां और जोरू से ताजिंदगी चिपका रहता है। चाहे अनचाहे में।"16

अल्मा आगे खुद अपने आप को श्रीराम शास्त्री को सौंप देती है। अल्मा उनके पर्चे पढ़ने का काम करती रहती है। अल्मा वहीं रुकी रहती है, क्योंकि उन्हीं लोगों ने उनकी दुनिया उजाड़ी थी। अल्मा सोच रही है, "आप समझते हैं कि मैं जिंदा भी क्यों हूं ? बड़ी सीधी बात है, आप लोगों ने हमारी दुनिया उजाड़ी है, मैं आपको उजाड़े बिना नहीं मरूंगी। मैं सबको बता दूंगी कि पाप कहां पलता है ? अपराध कौन लोग करते हैं? सताने और मारने वाले ठेकेदार कौन हैं ?...मैं बहुत समझती हूं कि क्या गलत है क्या सही।"17 अल्मा मंत्री को अपना सब कुछ समर्पण कर चुकी थी। लेकिन एक दिन मंदिर के जीर्णोद्धार के समय श्रीराम शास्त्री की किसी के द्वारा तीन गोली मारकर हत्या कर दी जाती है। उनके मरने के बाद अल्मा विधवा बनती है। एक पत्नी की भांति मंत्री जी के मरने के बाद सारे रीति रिवाजों को निभाती है।

लेकिन मैत्रेयी पुष्पा ने उपन्यास के अंत में अखबारों के माध्यम से यह खबर दिलवायी है कि, "श्रीराम शास्त्री के निधन के कारण खाली हुई बबीना विधानसभा सीट के लिए सत्तारूढ़ पार्टी की ओर से श्रीराम शास्त्री की निकटतम सहयोगी और निष्ठावान गाईड अल्मा उम्मीदवार होंगी।"18 यह बात कहकर मैत्रेयी पुष्पा ने कबूतरा जाति की औरत को उंचा उठाकर सच्चा आदिवासी विमर्श किया हुआ दिखाई देता है।

निष्कर्ष

मैत्रेयी पुष्पा ने अपने चर्चित उपन्यास 'अल्मा कबूतरी' के माध्यम से आदिवासियों के शोषण को बखूबी उभारा है। राजनीतिक क्षेत्र उनकी अनेकानेक मजबूरियों का फायदा उठा रहे हैं। इस समाज की आदिवासी स्त्रियों की दशा में कोई सुधार नहीं हुआ है। वे आज भी शारीरिक शोषण की शिकार हैं। लेखिका ने आदिवासी समाज की सच्चाई को उद्धृत किया है।

संदर्भ ग्रंथ

1 अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम आवृत्ति 2007, पृष्ठ 10
2 अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम आवृत्ति 2007, पृष्ठ 11-12
3 अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम आवृत्ति 2007, पृष्ठ 22
4 अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम आवृत्ति 2007, पृष्ठ 74
5 अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम आवृत्ति 2007, पृष्ठ 194
6 अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम आवृत्ति 2007, पृष्ठ 194
7 अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम आवृत्ति 2007, पृष्ठ 194
8 अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम आवृत्ति 2007, पृष्ठ 198
9 अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम आवृत्ति 2007, पृष्ठ 223
10 अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम आवृत्ति 2007, पृष्ठ 230
11 अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम आवृत्ति 2007, पृष्ठ 244
12 अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम आवृत्ति 2007, पृष्ठ 319
13 अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम आवृत्ति 2007, पृष्ठ 333
14 अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम आवृत्ति 2007, पृष्ठ 347
15 अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम आवृत्ति 2007, पृष्ठ 362
16 अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम आवृत्ति 2007, पृष्ठ 363
17 अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम आवृत्ति 2007, पृष्ठ 370
18 अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम आवृत्ति 2007, पृष्ठ 390